

प्रथम अध्याय

संचार-संकल्पना, परिभाषा एवं स्वरूप

सूचना और संचार

सूचना और संचार परस्पर गहराई से जुड़ी अवधारणाएँ हैं। निःसन्देह ये दो संकेत शब्द हैं, जो वैश्विक हलचल का प्रतिनिधित्व करते हैं; सही सूचना के समय पर सुविधाजनक रूप में संचरित होने से व्यापार, अनुसंधान और उद्योग-जगत में नई दिशाएँ खुलती हैं। आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी में मुख्य रूप से इलैक्ट्रानिक्स एवं दूर-संचार का समावेश है, जिसके कारण भारी मात्रा में डॉटा (Data) भण्डारित और संचारित किए जा सकते हैं।

संचार, मानव जीवन की मौलिक एवं महती आवश्यकता है और एक सहज प्रवृत्ति है। प्रागैतिहासिक लोगों द्वारा चित्र बनाकर अपनी बात संप्रेषित करने की शुरूआती तकनीक आज इंटरनेट तक पहुँच गई है। सामान्यतः संचार मानवीय समाज की संज्ञानात्मक प्रक्रिया है, जिसमें आवश्यकताओं का परस्पर आदान-प्रदान किया जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो, संचार, आदान-प्रदान का ऐसा एक नेटवर्क है जिसमें संप्रेषक और संग्राहक अपनी भूमिका या स्थान बदलते रहते हैं।

यह एक सामाजिक प्रक्रिया एवं प्रवृत्ति है। यह प्रवृत्ति समस्त जीवधारियों के व्यवहार में प्राप्त होती है। सभी प्राणी किसी-न-किसी सीमा तक अपनी तरह से सम्प्रेषण करते हैं। पर मनुष्य ऐसा एकमात्र प्राणी है, जिसने 'वाक्' वाणी के माध्यम से संचरण-योग्यता प्राप्त की है। यह उसकी अनोखी उपलब्धि है, जो मनुष्य द्वारा सफलतापूर्वक एक जटिल समाज विकसित करने की दिशा में सबसे बड़ा कारक है। आज हम अनुभव कर सकते हैं कि संचार का, मनुष्य के विकास की कहानी में कितना बड़ा योगदान है।

संचार संस्कृत के 'चर' धातु से बना है, जिसका अर्थ 'चलना' है। सामान्यतः 'संचार' शब्द को 'किसी बात को आगे बढ़ाना, चलाना या फैलाना' के अर्थ में ग्रहण किया जाता है। जब हम किसी भाव, विचार या जानकारी को दूसरों

तक पहुँचाते हैं या फैलाते हैं, तो यही संचार कहलाता है।

‘संचार’ के स्थान पर एक अन्य शब्द ‘संप्रेषण’ का प्रयोग भी किया जाता है। लेकिन हमें ‘कम्यूनिकेशन’ के लिए ‘संचार’ शब्द ही अधिक ग्राह्य लगता है। कारण, ‘संप्रेषण’ में भाव या विचारों के प्रेषण की एकतरफा प्रक्रिया का ही बोध होता है, जबकि ‘संचार’ में दोनों तरफ के संप्रेषण का। निस्सन्देह, ‘संचार’ व्यक्ति-व्यक्ति के बीच दोतरफा प्रक्रिया है और इस प्रकार यह एक मूलभूत वैयक्तिक एवं सामाजिक आवश्यकता तथा सार्वभौम मानवाधिकार है। संचार, जीवन को अर्थपूर्ण एवं जीवंत बनाता है।

संचार व्यवस्था

संचार-व्यवस्था समाज की प्रगति, सभ्यता और संस्कृति के विकास का माध्यम है। वह समाज पूरी तरह से जीवंत नहीं बन सकता, जिसके लोगों को, सही ढंग से राजनीतिक मामलों...विदेशी एवं स्थानीय घटनाओं या अपने परिवेश के बारे में सही और स्पष्ट जानकारी नहीं है। सरकारी तन्त्र को भी सफलतापूर्वक प्रशासन चलाने के लिए देश के सभी कोनों की यथार्थ जानकारी और वहाँ की समस्याएँ जानना अनिवार्य होता है, जिसकी पूर्ति संचार की प्रक्रिया अथवा संचार-माध्यमों से ही सम्भव है।

संचार, जीवन का आधारभूत सत्य है; यह व्यक्ति के लिए वायु और प्रकाश की तरह ही अपरिहार्य है। संचार, मानव समाज की संचालन प्रक्रिया को सम्भव बनाता है। अर्थात्, संचार, मानव समुदाय के जीवन की वह धुरी है, जिसके द्वारा मानव के सामाजिक सम्बन्धों का निर्माण एवं विकास होता है। दूसरे शब्दों में कहें, तो संचार सामाजिक व्यवस्था का शाश्वत अवयव है। संचार के आधुनिक विकास ने समय और दूरी की सीमाओं को समेट दिया है।

(सी.एल.लायड., कम्यूनिकेशन अससमेंट एण्ड इन्टरवेन्शन स्टेटजीस, 1976, यूनिवर्सिटी पार्क प्रेस, लन्दन, पृ. 4)

संचार को अँग्रेजी में 'Communication' कहा जाता है। यह शब्द लैटिन के 'कम्यूनिकेर' शब्द से बना है, जिसका अर्थ सामान्य भागीदारीयुक्त सूचना एवं सम्प्रेषण है। (To make common, to share, to import, to transmit) इस प्रकार, संचार वह प्रक्रिया है, जिसमें स्त्रोत-प्रेषक एवं श्रोता के मध्य सूचना-सम्प्रेषण होता है। इस प्रकार, स्पष्ट है कि संचार, विचारों के आदान-प्रदान से सम्बद्ध क्रिया है।

(ई.एम.रोजर एण्ड एफ.एफ.शूमेकर, कम्यूनिकेशन ऑफ इनोवेशन : ए क्रास कल्चरल एप्रोच, दि फ्री प्रेस, न्यूयार्क, पृ. 23)

The system of communication today is commonly owned, accepted and recognised by the members of the community. It enables them to acquire, exchange, store, retrieve and process information. Communication is thus essentially a social affair.

परिभाषा

मानव समाज का इतिहास वस्तुतः मानवीय विचारों के आदान-प्रदान या आशयों की संवेदना का इतिहास है। 'संचार' शब्द में मानव के विचारों या भावों की अभिव्यक्ति का अर्थ निहित है। दूसरे शब्दों में, 'संचार' एक ऐसा प्रयास है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के विचारों एवं मनोवृत्तियों में सहभागी होता है।

Communication is the chain of understanding that integrates the members of an organisation from top to bottom, bottom to top laterally.

...Megginson

Communication is the process by which, information, decision and direction pass through a social system and the ways in which knowledge, opinions and attitudes are formed or modified.

...Loomic and Beegle.

Communication is a process by which two or more people exchange ideas, facts, feelings or impressions in a way that each gains a common understanding of the message....Dr.J.Paul Leagans.

Communication is the carrier of Social Process.

...Media, communication & Development-Surech Chandra

Sharma

संचार एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके जरिए व्यक्तियों अथवा संगठनों के बीच सूचना इस रूप में संचारित की जाती है, जिससे कि उसके फलस्वरूप कुछ उत्तर या प्रतिक्रिया प्राप्त हो। Oral and Written Communication—Pitter Lirel.

संचार किसी संगठन के व्यक्तियों के बीच सार्थक रूप से एक-दूसरे को प्रभावित करने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके फलस्वरूप इनके बीच अर्थबोध एवं समाज की क्रियान्विति होती है। The Management Process.

संचार प्रत्येक व्यवस्था का नियामक है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो, संचार, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक, धार्मिक, शिक्षा एवं आधुनिकीकरण की विकास व्यवस्थाओं में आधारभूत एवं पर्यावरणीय व्यवस्था में एक लघु व्यवस्था है।

आधुनिक समाज में संचार की भूमिका परम्परागत समाज से सर्वथा भिन्न

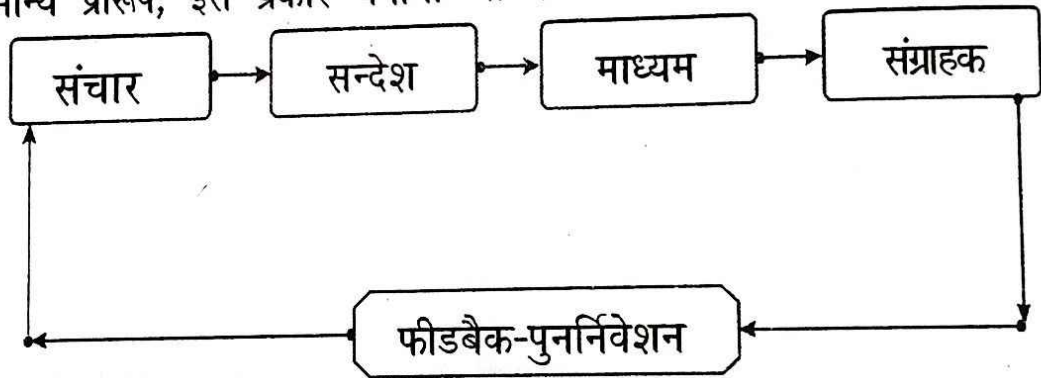
है। यह सामाजिक व्यवस्था का शाश्वत अवयव है। समाज की प्रत्येक व्यवस्था में संचार की केन्द्रित भूमिका है। इस संचार के माध्यम से लोगों को अपने समाज के प्रभावशाली सदस्य के रूप में जीने में मदद मिलती है तथा सामाजिक सम्बन्ध विकसित होते हैं।

राजनीतिक व्यवस्था में राज्य मूलभूत अवयव है। परन्तु, आधुनिक विश्व के राजनीतिक परिवेश में संचार की भूमिका, मूल नियामक बन गई है। राज्य व्यवस्था एवं नागरिकों में समन्वय, जनसंचार माध्यमों द्वारा ही स्थापित होता है। संचार प्रक्रिया द्वारा राजनीतिक व्यवहार में परिमार्जन एवं परिवर्तन तथा विकास एवं आधुनिकीकरण इत्यादि का समावेश होता है।

संचार का अध्ययन, स्वयं में महत्त्वपूर्ण है। संचार के प्रभाव एवं सम्भावनाओं की जानकारी के लिए उसकी प्रक्रिया का ज्ञान बहुत ही आवश्यक है।

संचार-प्रक्रिया और प्रमुख चरण

संचार-प्रक्रिया के अनेक चरण हैं। इनकी मदद से संचार प्रक्रिया का सामान्य प्रारूप, इस प्रकार बनाया जा सकता है।



इस प्रारूप से स्पष्ट है कि संचार, आपसी लेन-देन है; संचारक (Sender) और संग्राहक (Receiver) की अदला-बदली की भूमिकाएँ हैं। स्पष्ट है कि संचार दो-तरफा प्रक्रिया है, जिसमें प्रेषक एवं संग्राहक अपना रोल आपस में बदलते रहते हैं। संचार अपने भाव, विचार या सन्देश की वह अभिव्यक्ति, आदान-प्रदान या सम्प्रेषण है, जो प्राप्तकर्ता में प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है। प्राप्तकर्ता अपनी इस प्रतिक्रिया को, प्रेषक-संचारक तक उन्हीं संचार माध्यमों द्वारा पहुँचाता है।

प्रतिक्रिया या प्रतिपुष्टि, न सिर्फ संचार-प्रक्रिया की पूर्णता के लिए, वरन् उसकी साख के लिए अनिवार्य है। कुशल संचारक, हमेशा प्रतिपुष्टि के माध्यम से, अपने में बदलाव लाता है और लगातार सुधार करता रहता है। प्रिण्ट मीडिया में सम्पादक के नाम पत्र, मन्त्री महोदय के नाम पत्र, बहस, आकाशवाणी में श्रोताओं के पत्र, तथा दूरदर्शन में दर्शकों के पत्र, प्रतिपुष्टि के अन्तर्गत आते

हैं। इनके माध्यम से संचारक, अपने कार्यक्रमों की समीक्षा करके, उनमें आवश्यक सुधार लाते हैं। इस प्रकार कौन, क्या, किसके द्वारा, किसको, किस प्रभाव के साथ बताते हैं—ये ही प्रश्न इस नेटवर्क में आते हैं।

संचार-प्रक्रिया के पाँच मुख्य चरण हैं

सन्देश का निर्माण करना—Conceiving
संग्राहक तक सन्देश का पहुँचाना—Sending
संग्राहक का सन्देश को प्राप्त करना—receiving
सन्देश को समझना—Comprehending
प्रतिपुष्टि—Feedback

संचार और शैक्षिक क्षेत्र

संचार का अध्ययन आज सभी शैक्षिक पाठ्यक्रमों में शामिल किया जा रहा है। इस संचार के अध्ययन और बाकी विषयों के अध्ययन में थोड़ा-सा अन्तर है—

1. संचार तकनीकी आज तेजी से बढ़ रहा है। यह आज के युग की माँग है। इसलिए संचार सम्बन्धी विषय का आज विशेष महत्त्व हो गया है।
2. सभी विषयों का अध्ययन, जैसे रसायनशास्त्र, मनोविज्ञान, गणित, साहित्य आदि का अध्ययन मुख्य रूप से सैद्धान्तिक अधिक होता है। इनमें व्यावहारिक पक्ष का प्राधान्य थोड़ा बहुत होता है, परन्तु ज्यादा नहीं। लेकिन संचार का अध्ययन व्यावहारिक अधिक, सैद्धान्तिक कम होता है।
3. शेष विषयों के विकास की सीमा का निर्धारण होता है। परन्तु संचार के विषय के विकास की परिसीमा नहीं होती।
4. संचार का अध्ययन प्रक्रिया-केन्द्रित होती है, जबकि शेष विषयों का अध्ययन विषय या विचार-केन्द्रित होता है। अधिकांश क्षेत्र अपने आपमें स्पष्ट, पूर्ण और स्वावलम्बी हैं। संक्षेप में इन विषयों में तथ्यों या स्थितियों का अध्ययन होता है। संचार सम्बन्धी अध्ययन में भी तथ्यों की मुख्य भूमिका तो है, लेकिन यह विषयबिन्दु को जनता तक पहुँचाने के व्यावहारिक पक्ष पर केन्द्रित है। अतः कहा जाता है प्रक्रिया-केन्द्रित। यही संचार सम्बन्धी अध्ययन की एक मुख्य खूबी है।
5. सभी अन्य विषयों का अध्ययन अपने आप पर केन्द्रित है, जबकि संचार सम्बन्धी अध्ययन हमेशा दूसरे विषयों को लेकर चलता है। साहित्यिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि बहुत-से विषयों से यह जुड़ा रहता

है। उदाहरण के लिए दूसरे विषयों की अपनी निश्चित सीमा होती है, जैसे—मध्यकालीन भारत, साठोत्तर कथा साहित्य, इनआरगानिक केमिस्ट्री आदि। लेकिन संचार सम्बन्धी अध्ययन तथा उसकी पद्धति विज्ञान के किसी भी पक्ष को लेकर चलते हैं।

Communication studies draws its material, its evidence, and many of its theories from a wide range of fields of studies including Psychology, Sociology, Linguistics, History, Politics, Economics, Telecommunications and Anthropology. (What is Communication Studies—Watson James, Edward Arnold Ltd., London, 1988, Page. 6)

संचार-प्रक्रिया के तकनीक Techniques of Communication

1. संग्राहक की समझशक्ति के अनुसार सन्देश भेजना है।
2. छोटी-छोटी इकाई में सन्देश भेजना है।
3. प्रतिपुष्टि के लिए अवसर देना है।
4. संचार की प्रक्रिया में सही भागीदारी का अवसर देना है।

प्रभावी संचार के निम्न मुख्य कारक हैं...

1. संचार प्रक्रिया के पहले इस बात का विचार करना है कि जो सन्देश हम देने वाले हैं, उसके बारे में स्पष्ट रूप से जानकारी रखें। जो विचार या समस्या सम्प्रेषित होने वाली है, उसका पूरा विश्लेषण व्यवस्थित रूप से मन-ही-मन कर लेना चाहिए। यही संचार प्रक्रिया का सबसे प्रमुख तत्त्व है।
2. संचार के मूल उद्देश्य पर ध्यान दें। हर एक सम्प्रेषण का जो एक मुख्य उद्देश्य है, उस पर पूरा ध्यान दें। संचार प्रक्रिया के आरम्भ के पूर्व हम मन-ही-मन ये प्रश्न पूछ लें—
 - (क) हम इस सन्देश के सम्प्रेषण से किस लक्ष्य को प्राप्त करने वाले हैं? क्या यह सन्देश केवल सूचनार्थ है?
 - (ख) क्या यह सन्देश संग्राहक की प्रतिक्रिया जानने के लिए है?
 - (ग) क्या इस सन्देश के संग्राहक की मानसिक स्थिति और विचारों में हम परिवर्तन लाना चाहते हैं?

इस प्रकार हमें संचार प्रक्रिया के प्रधान उद्देश्य की संकल्पना करके, उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए भाषा और माध्यम का चयन करना चाहिए।
3. संचार प्रक्रिया के लिए जरूरी भौतिक परिवेश पर ध्यान रखें और साथ-साथ संग्राहक की मानसिक स्थिति की भी। यदि भौतिक परिवेश, सम्प्रेषण के

उद्देश्य की पूर्ति में गतिरोध डालने वाले हो, तो हमें वहाँ इस प्रक्रिया का प्रारम्भ न करना ही उचित है।

4. संग्राहक की मनःस्थिति यदि अव्यवस्थित है, और वह दिए हुए सन्देश पर ध्यान रखने में असमर्थ है, और वह शारीरिक और मानसिक दृष्टि से अस्वस्थ है, तब इस संचार प्रक्रिया के प्रारम्भ का कोई अर्थ नहीं रहता।
5. संचार की योजना बनाते हुए दूसरों से परामर्श लेना चाहिए कि कौन-सा स्थान सम्प्रेषण के उद्देश्य की पूर्ति के लिए उपयोग रहेगा।
6. संचार प्रक्रिया के बीच-बीच में हम थोड़ा-सा यह ध्यान रखें कि हम जो सन्देश दे रहे हैं, वह संग्राहक पर असर डाल रही है या नहीं। यह भी ध्यान रखें कि हम अपने विचार को छोड़कर किसी दूसरे के विचार का सम्प्रेषण तो नहीं कर रहे हैं। हमें स्वयं अपनी भाषा, अपना प्रस्तुतीकरण और अपनी मनःस्थिति पर नियन्त्रण होना चाहिए। तभी हम प्रस्तुत विषय को छोड़कर दूसरे विषय को नहीं अपनाएँगे।
7. सही मौके पर हमें संग्राहक को सन्देश पहुँचाना है।
8. हमें यह देखना है कि संचार प्रक्रिया का अनुपालन होता है कि नहीं। हमारा सम्प्रेषण ऐसा होना चाहिए, जो केवल कल के लिए नहीं, लेकिन आने वाले दिनों के लिए भी आवश्यक हो।
9. सम्प्रेषण के समय हमारी आंगिक चेष्टाएँ साथ दें।
10. संचार प्रक्रिया के समय हम यह ध्यान दें कि जो श्रोता है, वह भी कुछ कहना चाहता है। हमें लगातार अपने विचारों की अभिव्यक्ति के बदले श्रोता को अपने विचारों को प्रकट करने के लिए मौका देना चाहिए। एक अच्छा सम्प्रेषणकर्ता एक अच्छा श्रोता भी होता है। यहाँ पर हमें यह ध्यान रखना है कि संचार प्रक्रिया द्विमार्गी पद्धति है। इसके लिए अनिवार्य है कि सम्प्रेषण और संग्राहक के बीच मैत्री भाव हो, एवं सौहार्द्रपूर्ण वातावरण हो।

द्वितीय अध्याय

संचार-प्रक्रिया के प्रमुख घटक और स्तर

संचार-प्रक्रिया के प्रमुख घटक

Sender...Message...Channel...receiver...Feedback

Who syas, what, through which channel. to whom, with what effect

प्रेषक...सन्देश....माध्यम...संग्राहक...प्रतिपुष्टि

कौन, क्या कहता है, किस माध्यम से, किससे, किस प्रभावी रूप से।

1. स्रोत : द्वारपाल या गेटकीपर या प्रेषक

संचार प्रक्रिया में स्रोत का प्रमुख स्थान है। इसको द्वारपाल या दरबान कहा जाता है। द्वारपाल सूचना का चयन करता है और श्रोता को संप्रेषित की जाने वाली सूचना को प्रभावित भी करता है। समाचार पत्र का सम्पादकीय दल, रेडियो या टेलीविजन के कार्यक्रम-कर्मिंदल या कोई अन्य ऐसी संस्था द्वारपाल के समान है। संचार प्रक्रिया की शुरुआत प्रेषक से होती है। पत्र का सम्पादक दल, पत्र की आवश्यकता के अनुरूप टेलिप्रिन्टर से आने वाले समाचारों से जरूरी समाचारों का चयन करता है। यहाँ सम्पादक स्रोत है। यह जनसंचार माध्यम का द्वारपाल है। लेकिन इस द्वारपाल की भूमिका अन्तरव्यक्ति संचार के द्वारपाल से भिन्न होती है।

2. चयनित सूचना और सन्देश

संस्थाएँ प्रतिदिन भारी मात्रा में सूचना प्राप्त करती हैं। इन प्राप्त सूचनाओं में से समाज के लिए जरूरी सन्देश चयनित किया जाता है। यही श्रोता तक पहुँचता है। सन्देश का प्रभाव, संप्रेषक द्वारा प्रयुक्त शब्द एवं विचारों के ऊपर निर्भर करता है। सन्देश अपने प्रभाव के अनुसार सकारात्मक एवं नकारात्मक होते हैं। सकारात्मक सन्देश श्रोता को आकर्षित करता है जिसका परिणाम लाभदायी होता है। नकारात्मक सन्देश हानिकारक और आलोचनात्मक होता है।

3. संचार मार्ग-संचार साधन या संचार माध्यम

यह एक ऐसा माध्यम है, जो संप्रेषक और श्रोता को एक-दूसरे से जोड़ते हैं। “माध्यम” शब्द अंग्रेजी “मीडिया” शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है—दो बिन्दुओं को जोड़नेवाला। सन्देशों के प्रसारण के लिए प्रयुक्त उपकरणों और अन्य साधनों को माध्यम कहा जाता है।

संचार माध्यम मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं—परम्परागत और आधुनिक।

4. संग्राहक या श्रोता

सन्देश पाने वाले व्यक्ति या समूह को संग्राहक या प्राप्त कर्ता कहा जाता है। सामान्य भाषा में इन्हें श्रोता, दर्शक या पाठक आदि कहा जाता है। ‘श्रोता’ शब्द अंग्रेजी ‘ऑडियन्स’ शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। ‘ऑडियन्स’ का अर्थ है—पाने वाला। यह शब्द, लैटिन के ‘audei’ शब्द से आया है। जनसंचार माध्यमों के विकास के परिणामस्वरूप श्रोतावर्ग के आकार-प्रकार में भी व्यापक परिवर्तन हो गया है। परम्परागत और वर्तमान श्रोता वर्ग के चरित्र एवं व्यवहार में भी अन्तर है। परम्परागत मार्ग का श्रोतावर्ग किसी निश्चित दायरे में सिमट पड़ा था। वर्तमान समय में जनसंचार माध्यमों का श्रोता-वर्ग विश्व भर में बिखरा पड़ा है। जहाँ तक जनसंचार माध्यमों की सन्देश-प्रसार-क्षमता है, वहाँ तक यह श्रोता वर्ग भी है।

सम्प्रेषण प्रक्रिया का लक्ष्यबिन्दु हमेशा संग्राहक होते हैं।

श्रोता वर्ग दो प्रकार के होते हैं—

1. प्राथमिक श्रोता—ओपीनियन लीडर
2. प्रतिश्रोता—सेकन्डरी लीडर।

प्राथमिक श्रोता वह व्यक्ति है, जो दिन प्रतिदिन के जनसम्पर्क द्वारा जनमत का निर्माण करता है और समस्याओं की निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित करता है। यह ओपीनियन लीडर है। प्रतिश्रोता या सेकन्डरी लीडर वह है, जो प्रेषित सन्देश को सीधे न प्राप्त कर प्राथमिक श्रोता से लेता है।

5. प्रतिपुष्टि

प्रतिपुष्टि वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा श्रोता या संग्राहक अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। यह फीडबैक की प्रक्रिया, अन्तरव्यक्ति-संचार में, मुस्कुराहट के द्वारा, व्यवहार एवं हाव-भाव के द्वारा प्रकट होती है। फीडबैक के अभाव में सम्प्रेषण-प्रक्रिया पूर्ण नहीं हो सकती। सम्प्रेषण प्रक्रिया के दुतरफा प्रयोग के लिए प्रतिपुष्टि का होना बहुत जरूरी है। इसके बिना प्रेषक को यह मालूम नहीं

होगा कि प्राप्तकर्ता पर सन्देश का क्या असर पड़ा है। इस तरह प्रतिपुष्टि, संचार-प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। 'Much of the success of communication depends on how well a source adapt and respond to the feedback.' (Speech Communication, Soundra Hybels, D.Van Norstrand Company, London, 1974, p. 6)

फीडबैक या प्रतिपुष्टि चार प्रकार की होती है—

1. सकारात्मक 2. नकारात्मक। 3. स्वतः भी और 4. प्रायोजित ढंग से भी।

सकारात्मक प्रतिपुष्टि संग्राहक के समर्थन को दिखाती है, तो नकारात्मक, उसके विरोध को। नकारात्मक में आलोचना और सुझाव भी आ सकते हैं।

स्वतः फीडबैक में, संग्राहक/प्रापक अपनी प्रतिक्रिया स्वयं भेज देता है, जैसे सम्पादक के नाम पत्र और अधिकारी से स्वयं मिलकर शिकायत करना इत्यादि रूपों में हो सकती है।

प्रायोजित फीडबैक में संग्राहक की प्रतिक्रिया, बातचीत, इन्टरव्यू, परिसंवाद, परिचर्चा इत्यादि के माध्यम से प्राप्त की जाती है।

संचार प्रक्रिया का अध्ययन करते हुए हमने यह पाया है कि प्रभावशाली ढंग से संचार तभी हो सकता है, जब संचारक के शब्दों और प्रतीकों का अर्थ-सन्देश प्राप्तकर्ता के लिए वही हो, जो स्रोत या संचारक के लिए होता है।

6. बाधा या रूकावट

बाधा या रूकावट संचार प्रक्रिया के साथ-साथ संचार मार्ग में मुख्य रूप से जुड़ा है। बाधा या शोर या रूकावट, श्रोता को प्रेषित सूचना प्राप्त करने से रोकती है। बाधा या शोर वह प्रक्रिया है, जो सूचना प्रवाह की शृंखला, दिशा और आयाम को अवरुद्ध करती है।

मोटे तौर पर बाधा दो प्रकार की होती है—

बाह्य बाधा और मानसिक बाधा

बाह्य बाधा—यह दो प्रकार की होती है—तकनीकी (Transmission Disorders) और शब्द अर्थ की प्रकृति की। (Semantic Disorders).

तकनीकी बाधा—तकनीकी साधनों के कारण सम्प्रेषित सूचना, श्रोता को सुस्पष्ट रूप में प्राप्त नहीं होती। जैसे दूरभाष संचार के समय शोर।

शब्द और अर्थ की बाधा—वह है जिसके कारण सम्प्रेषित सन्देश, उसी शब्द, अर्थ और भाव में ग्रहण नहीं किया जाता। इस बाधा में प्रेषक और श्रोता

के बीच अर्थगत भिन्नता होती है। अतएव बाधा के निराकरण के लिए प्रत्येक चरण पर सतर्कता रखने की आवश्यकता है।

मानसिक बाधा (Mental Confusion)

मानसिक रूप से तनाव या अस्वस्थता, सूचना-प्रवाह में रुकावट डालती है। गलत उच्चारण, प्रेषक और संग्राहक के बौद्धिक स्तर का अन्तर, वातावरण की विभिन्नता, विश्वास या आस्था का बदलना, अव्यवस्थित मानसिक दशा आदि इसके अन्तर्गत आते हैं।

बाधा के कारण

1. सन्देश के प्रस्तुतीकरण में जब प्रेषक असमर्थ रहता है।
2. माध्यम में आने वाली बाधाएँ।
3. सन्देश का अपरिपक्व मूल्यांकन।
4. अस्पष्ट मान्यताएँ।
5. सन्देश का जब प्रेषक गलत अर्थ निकालता है।
6. संग्राहक की यादगार में कमी।
7. संग्राहक के ध्यान देने की प्रवृत्ति में कमी।
8. भिन्न दृष्टिकोण से सच्चाई को परखना।

सौन्द्रा हैबेल्स ने कहा है—"Noise is the distraction between the source and receiver. It can be physical or psychological. Psychological noise occurs in the mind of sender or receiver and distract him or her from the message. It may be due to the effect of previous communication." (Speech Communication, Soundra Hybels, D.Van Norstrand Company, London, 1974. P. 6)

संचार-प्रक्रिया के विभिन्न स्तर

1. एकचरणीय संचार (One Step Flow)

इसके लिए दो नाम हैं—सूचिका भेद संचार या बुलेट संचार।

इस प्रारूप का सम्बन्ध एक प्रत्यक्ष श्रोता और सम्प्रेषक से होता है। इसमें संचार माध्यमों से श्रोता को सीधे मिलने वाला सन्देश सूचिका के समान प्रभावी माना जाता है। इसका मानना है कि प्रत्यक्ष सूचना प्रवाह, श्रोता को काफी प्रभावित करता है। संचार के इस प्रारूप की खोज, मनोविज्ञान की खोजों द्वारा 1930-40 के मध्य में हुई।

2. द्विचरणीय संचार (Two Step Flow)

1940 के अमेरिकी चुनाव में संचार माध्यम की सम्प्रेषण प्रक्रिया का मूल्यांकन किया गया। यही पाया गया कि संचार माध्यम द्वारा सम्प्रेषण-प्रक्रिया, सामाजिक व्यवस्था में प्रभाव का एक भाग ही है। इस अध्ययन के आधार पर उन्होंने एक चरणीय संचार के स्थान पर द्विचरणीय संचार को अधिक प्रभावी स्थापित किया। इससे स्पष्ट होता है कि कम विकसित क्षेत्रों में केवल संचार माध्यमों से सूचना का प्रकार सम्भव नहीं है।

इस संचार के प्रथम चरण में संचार माध्यम द्वारा सम्प्रेषित समाचार, विपुल श्रोताओं द्वारा प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त किया जाता है। सूचना-प्रवाह के दूसरे चरण में ये विपुल श्रोता-ओपीनियन लीडरस्—अपने सम्बन्धी मित्रों और अपने स्थानीय परिवेश में सूचना का सम्प्रेषण करते हैं। यह दूसरा चरण अन्तरव्यक्ति संचार द्वारा होता है। इस प्रकार द्विचरणीय संचार-प्रक्रिया में, सूचना, विभिन्न संचार माध्यमों से विपुल श्रोता तक पहुँचती है और फिर उनके द्वारा जनसंख्या के शेष भाग तक पहुँचती है।

3. बहुचरणी संचार 'N' Step Flow

यह सिद्धान्त इस आधार पर विकसित है कि संचार-प्रवाह में अनेक चरण होते हैं। कोई सन्देश किसी को प्राप्त हुआ तो उसने प्रत्यक्ष अथवा अन्य प्रकार से दूसरे को वह सन्देश सुनाया। उस दूसरे व्यक्ति ने तीसरे को सुनाया और तीसरे ने चौथे को, पाँचवें को। इस प्रकार इस संचार-प्रक्रिया में अनेक प्रतिश्रोताओं के द्वारा संचार प्रवाहित होता रहता है। यह संचार-प्रक्रिया भारतीय ग्रामीण परिवेशों में अधिक पाई जाती है। इसमें ऐसी भी स्थिति आ सकती है जबकि अन्तिम श्रोता तक पहुँची हुई सूचना, प्रथम श्रोता को मिली हुई सूचना से एकदम भिन्न हो।

जनसंचार माध्यम : स्वरूप और विस्तार

जनसंचार माध्यम के प्रमुख रूप से दो प्रकार होते हैं : १. मुद्रण माध्यम (Print Media), और २. इलैक्ट्रॉनिक मीडिया (Electronic Media) । इनका विवेचन निम्नानुसार प्रस्तुत है :

३.१ समाचार पत्र से तात्पर्य : अंग्रेजी में समाचार के लिए 'NEWS' शब्द का प्रयोग किया जाता है । 'NEWS' शब्द चार शब्दों के आद्यक्षरों N=North, E=East, W=West और S=South से मिलकर बना है । अतः इन चारों दिशाओं-पूरब, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण की खबरों या समाचारों को देने के कारण NEWS PAPER या समाचार पत्र नाम प्रचलित हुआ । आज वही समाचार-पत्र सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है जो इन चारों दिशाओं अर्थात् अंतर्राष्ट्रीय स्तर के समाचारों को छापता है । इसीलिए तो आज के वैज्ञानिक युग में लोकतांत्रिक राष्ट्रों में समाचार पत्र को चतुर्थ विश्व (Fourth World) की संज्ञा दी जाती है । समाचार पत्र कई प्रकार के होते हैं; यथा: दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक समाचार पत्र आदि । इनके अतिरिक्त मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक, वार्षिक पत्रिकाएँ भी समाचार पत्रों की श्रेणी में ही आती हैं । लेकिन उनकी सामग्री और स्तर दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक समाचार पत्रों की अपेक्षा भिन्न होता है । समाचार पत्रों के विविध विषय होने के कारण एक भाषा के एक समाचार पत्र में भाषा के विविध प्रयुक्त स्तर समाहित हो जाते हैं ।

३.२ भारत में समाचार-पत्रों का उद्भव : मानव विश्व जीव समाज का सर्वाधिक बुद्धिशाली प्राणी है तथा भाषारूपी अभिव्यक्ति का सशक्त हथियार उसके पास होने के कारण उसकी जिज्ञासा बढ़ती रहती है और उसकी नित नवीन समाचारों के प्राप्त करने की भूख और अधिक बढ़ती रहती है । इस दृष्टि से समाचार पत्रों का प्राचीन रूप कुछ न कुछ तो अवश्य ही रहा होगा। प्राचीन काल में जब मुद्रण नहीं था तब भी डुगडुगी, शिलालेख, हरकारे आदि के माध्यम से राजकीय घोषणाएँ तो की ही जाती थीं जिनके ऐतिहासिक साक्ष्य उपलब्ध हैं । मौर्यकाल में समाचारों के संकलन और उनके वितरण की सुचारु व्यवस्था का उल्लेख मिलता है । रोम साम्राज्य में पढ़े-लिखे गुलामों द्वारा 'संवाद-पत्र' लिखे जाते थे जिनमें राजनीतिक एवं आर्थिक समाचारों का उल्लेख रहता था । मुगल शासकों, छत्रपति शिवाजी, नाना फड़नवीस आदि के दरबारों